

(आर्या)

तव पद मेरे हिय में, मम हिय तेरे पुनीत चरणों में ।  
तब लौं लीन रहौं प्रभु, जब लौं पाया न मुक्ति-पद मैंने ॥  
अक्षर पद मात्रा से दूषित, जो कछु कहा गया मुझसे ।  
क्षमा करो प्रभु सो सब, करुणाकरि पुनि छुड़ाहु भव दुख से ।  
हे जगबन्धु जिनेश्वर! पाऊँ तव चरण-शरण बलिहारी ।  
मरण समाधि सुदुर्लभ, कर्मों का क्षय सुबोध सुखकारी ॥

(नौ बार णमोकार मंत्र का जाप करें ।)

(क्षमापना)

(दोहा)

बिन जाने वा जान के, रही टूट जो कोय ।  
तुम प्रसाद तैं परम गुरु, सो सब पूरन होय ॥१॥  
पूजन-विधि जानूँ नहीं, नहिं जानूँ आह्वान ।  
और विसर्जन हूँ नहीं, क्षमा करहु भगवान ॥२॥  
मन्त्रहीन धनहीन हूँ, क्रियाहीन जिनदेव ।  
क्षमा करहु राखहु मुझे, देहु चरण की सेव ॥३॥  
तुम चरणन ढिंंग आयके, मैं पूजूँ अति चाव ।  
आवागमन रहित करो, मेटो सकल विभाव ॥४॥

नाथ तुम्हारी पूजा में सब, स्वाहा करने आया ।  
तुम जैसा बनने के कारण, शरण तुम्हारी आया ॥टेक॥  
पंचेन्द्रिय का लक्ष्य करूँ मैं, इस अग्नि में स्वाहा ।  
इन्द्र-नरेन्द्रों के वैभव की, चाह करूँ मैं स्वाहा ।  
तेरी साक्षी से अनुपम मैं यज्ञ रचाने आया ॥१॥  
जग की मान प्रतिष्ठा को भी, करना मुझको स्वाहा ।  
नहीं मूल्य इस मन्द भाव का, व्रत-तप आदि स्वाहा ।  
वीतराग के पथ पर चलने का प्रण लेकर आया ॥२॥  
अरे जगत के अपशब्दों को, करना मुझको स्वाहा ।  
पर लक्ष्यी सब ही वृत्ती को, करना मुझको स्वाहा ।  
अक्षय निरंकुश पद पाने और पुण्य लुटाने आया ॥३॥  
तुम हो पूज्य पुजारी मैं, यह भेद करूँगा स्वाहा ।  
बस अभेद में तन्मय होना, और सभी कुछ स्वाहा ।  
अब पामर भगवान बने, यह सीख सीखने आया ॥४॥